PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 3, ISSUE 6

'देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम्' में दीक्षितजी की व्यंग्य-चेतना

डॉ. आर. डी. पटेल
संस्कृत विभागाध्यक्ष
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज, विजयनगर
जि. साबरकांठा, उत्तर गुजरात

आधुनिक संस्कृत साहित्य को अनेक कवि साहित्य सर्जन द्वारा समृद्ध कर रहे हैं । विशेषत: मुक्तक काव्य के स्वरूप की आधुनिक कृतियाँ जब अल्पमात्रा में लिखि जा रही है तब मुक्तक साहित्य में डॉ. हरिनारायण दीक्षित का विशेष, योगदान दृश्यमान होता है । उनकी लेखनी द्वारा २६ कृतियों की रचना हुई हैं । जिनका आधुनिक संस्कृत साहित्य में विशेष, स्थान हैं । उन्होंने चार महाकाव्य, दो गद्यकाव्य, दो मुक्तककाव्य तथा शतककाव्य, सदेशकाव्य, दृश्यकाव्य, खंडकाव्य, कथाकाव्य, संस्कृतकाव्य, संस्कृत निबन्धावली, सुक्तिसंग्रह, समीक्षात्मक अध्ययन आदि ग्रन्थों का सर्जन किया है । साथ ही अनेक ग्रन्थों का संपादन एवं अनुवाद भी किया है । संस्कृत साहित्य में उनके विशिष्ट योगदान के लिए भारत सरकारने सन् २००३ में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया था । इसके अतिरिक्त विभिन्न ९ पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया है ।

दीक्षितजीने लगभग साहित्य की सभी विधाओं में अपनी कलम चलायी है और इसमें सफलता भी प्राप्त हुई हैं । उनके द्वारा रचित 'देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम्' मुक्तक काव्य में १०९ पद्य संग्रहित है, जिनमें भारत देश की विसंगतताओं के प्रति मार्मिक व्यंग्य किए गये हैं । इस कृति में उन्होंने व्यंग्य और व्याजस्तुति द्वारा देश की विद्रूपताओं की खिल्ली उडायी है ।

आलोच्य कृति के आरंभ में कविने गणपति का त्याग करनेवाला, सरस्वती देवी को व्यर्थ माननेवाला, गुरुजनों की उपेक्षा करनेवाला, गंगा जैसी पवित्र नदीयों को प्रदुषित करनेवाला, तीर्थस्थानों को बाजार बनानेवाला, जंगलो को काटनेवाला, संस्कृति का परित्याग करनेवाला यह देश अच्छी प्रगति कर रहा है, ऐसा कहकर भारतीय संस्कृति एवं सदाचार पर

हो रहे कुठाराघात से व्यथित होकर व्याजस्तुति द्वारा देश के अध:पतन की ओर अंगुलीनिर्देश किया है ।

वर्तमान समय में हो रही धर्म की उपेक्षा कवि को दु:ख पहुँचाती है । वे कहते है - " अपने धर्म को तिलांजलि देकर पराये धर्म को अपनानेवाले तथा श्रीमद् भगवद्गीता का तिरस्कार करनेवाला यह देश अच्छी प्रगति कर रहा है ।"[१]

आज के इस युग में देश की राजनीति नीतिविहिन हो गयी हैं । नेताओने वर्ण व्यवस्था को जातिवाद में तबदीलकर अपनी वोट बेंक को सुरक्षित करने का घिनौना कृत्य किया है । कवि कहते है –

"मत-पद-धन लिप्सूनां
नेतृणां कृपाकटाक्षक्षौब: ।
देशो निमील्य नेत्रे
धावत्यपूर्वे प्रगतिपंथे ॥"[२]

अर्थात् 'मत, कुर्सी और धन की इच्छा रखनेवाले नेताओ की कृपादृष्टि पाकर यह देश आँखे बंध करके अभूतपूर्व प्रगति के रास्ते पर दौड़ रहा है ।' नेताओने सत्ता प्राप्त करने के लिए और सत्ता पर बने रहने के लिए भारतीय समाज को जाति और सम्प्रदाय के आधार पर विभक्त कर दिया है । इस विद्रुप स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कवि कहते है – "देश के नेतालोग स्वार्थी बन गये है । चुनाव समिति में जातिवाद फैल गया है । बिन सांप्रदायिक कहलाने वाला यह देश संप्रदाय की गर्तो में विभाजित होकर परस्पर ईर्ष्या और कलह फैलाते हुए आगे बढ रहा है ।"[३]

देश में अंग्रेजी भाषा को प्राधान्य देकर भारतीय आर्यभाषाओं की जननी-संस्कृत भाषा की उपेक्षा करनेवाले राष्ट्रनेताओं को संबोधित करते हुए कवि कहते है कि –

"भव्यां संस्कृतभाषां
समुपेक्षन्ते स्वराष्ट्रनेतार: ।
अजा एडका दुहते
विजहति ते धनुं क्षीरिणीम् ॥"[४]

अर्थात् देश के राजनेता सुन्दर संस्कृत भाषा की उपेक्षा कर उत्तम दुध देने वाली गाय को छोड़कर भेड-बकरीयों को दुह रहे हैं ।

सत्ताप्रेमी नेतालोग चुनाव में ज्यादा मत प्राप्त करने की लालसा में देश की संस्कृति को बेच रहे है । आरक्षणनीति के द्वारा निम्न जातियों के मतो को बटोर रहे है । (श्लोक – ३२, ३३) वे कहते है कि - "इस देश में विद्या का भले ही नाश हो किन्तु आरक्षणनीति बनी रहनी चाहिए । यह आश्चर्य की बात है कि ज्ञान को नुकशान पहुँचाकर विभिन्न जातियों को संतुष्ट किया जाता है ।"[५]

आज देश की प्रजा सुरक्षित नहीं है । "यात्रा-प्रवास करना, यहाँ तक की थियेटर में बैठकर फिल्म देखना भी जोखिम से खाली नहीं है । जगह-जगह पर बोम्ब विस्फोट द्वारा जन संख्या का नियंत्रण हो रहा है ।"[६] "रिश्वत का जादु देश में हर जगह देखने को मिलता है । वह क्षणभर में अच्छे को बूरा और बूरे को अच्छा आदमी बना देता है ।"[७] "हमारा देश ऋण के बोझ से दब रहा है, फिर भी हमारे नया कर्ज लेकर देश के लोगों का कर्ज माफ करते रहते हैं ।"[८]

दिन-प्रतिदिन देश में गुंडागर्दी बढ रही है । सत्ता लोग लोलुप नेता उनको परोक्ष रुप से सहयोग दे रहे है । कवि व्यंग्य करते हुए कहता है –

"उच्छृङ्खलता वाद:
प्रभवति नित्यं सम्पूर्णे देशे ।
मतलुब्धा नेतार:
नहि तं दाम्यन्ति च कातरा: ॥"[९]

इस देश में बाहुबल के आधार पर निर्बलो की संपत्ति छिन ली जाती है । गुंडे और डाकु नेताओं के मित्र बने हुए है । इस देश के युवक को खेती करने में शर्म आती है, परंतु वह दुसरे की नौकरी करने के लिए तत्पर रहते है । भारत का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि यहाँ शारीरिक श्रम का कोई महत्त्व नहीं है, कोई सम्मान नहीं है ।

भारतीय समाज की वास्तविक स्थिति का निरुपण करते हुए दीक्षितजी कहते है कि - "कौशल्या के इस देश में स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बनकर उसे दु:ख दे रही है । माताएँ बहुओं की निन्दा करती है ।"[१०] यहाँ पुत्र जन्म को ही श्रेयस्कर माना जाता है । दहेजप्रथा समाज में विष की तरह व्याप्त हो गयी है । दहेज देने की असमर्थता के कारण अयोग्य लडके के साथ

लड़की का विवाह कर दिया जाता है । सोनोग्राफी जैसी आधुनिक तकनीक द्वारा गर्भस्थ शिशु का लिंग जानकर यदि वह पुत्री हो तो भृणहत्या की जाती है । कम दहेज लेकर आयी हुई बहुओं को मारा-पीटा जाता है या जिन्दा जला दिया जाता है । (श्लोक-४८ से ५१) मनु के इस देश में बहन-बेटीयों के अपहरण, बलात्कार और छेडखानी की घटनायें निरन्तर होती रहती है । (श्लोक – ५२, ५३)

देश में दुष्टों का साम्राज्य दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा है । इसका चित्रण करते हुए कवि कहता है –

"खलावृता सज्जनता
विपद्यते पङ्कनिमग्ना गौरिव ।
तस्या रक्षाकरणे
यतमानः कोऽपि न दृश्यते ॥"[११]

अर्थात् दुष्टों से घिरी हुई सज्जनता कीचड में फँसी हुई गाय की तरह तडप रही है । और कोई मनुष्य इस की रक्षा करने के लिये तत्पर दिखायी नहीं देता ।

यहाँ सज्जन आदमी मारा जाता है और दुर्जनो की आवभगत होती है । धृष्टता बढ रही है । (श्लोक – ५७ – ५८) इसके कारण सिद्धान्तवादी लोग भी अपने सिद्धान्तों का त्याग कर रहे है । (श्लोक – ६१) नेता लोग राजनीति के बाजार में अपने आपको बेच रहे है । विडम्बना यह है कि अधिकार वर्ग भी दगाखोरो के अधीन होकर काले-कारनामे करते है । इस प्रकार मिथ्यावादी, स्वार्थी और दगाखोर लोगों की संख्या बढ रही है । (श्लोक – ६३ से ६५)

इस देश में गुणविहिन व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है और गुणवान व्यक्ति की तीनके के समान उपेक्षा की जाती है । कामचोरी करनेवाले चमचों के कहने पर अधिकारीवर्ग कार्यकुशल सज्जनों को दु:ख पहुँचाते है । "यहाँ स्यारों की पूजा होती है और गाय-बैल का अनादर होता है । इस देश में कुटिलता की जीत और सरलता की हार हो रही है ।"[१२]

शिक्षा जैसे पवित्रक्षेत्र में व्याप्त बदियों का वर्णन करते हुए कवि कहते है कि शिक्षाक्षेत्र से संलग्न व्यक्ति अपनी विद्वता प्रदर्शित करने के लिए अपने सहकर्मी की अवहेलना या अपमान करने में जरा भी हितकिचाते नहीं । अध्यापक वर्ग अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाह होते हुए भी उच्च पदों पर आसीन होने के सपने देखते रहते है ।

भारतीय समाज में अर्थ या धन को विशेष प्राधान्य मिल रहा है । इसमें अच्छे-बूरे का विवेक नहीं किया जाता । "आजकल लोभ उपर की आमदनीवाली नौकरी को श्रेष्ठ समझते है । विवाह के बाजार में भी रिश्वत अधिक मिलती हो ऐसी नौकरी करनेवाले वर को श्रेष्ठ समझा जाता है ।"[१३]

आजकल हमारे समाज में पुत्रो द्वारा माता-पिता की निंदा और उपेक्षा देखने को मिलती है । (श्लोक – ८८) परंपरागत आतिथ्य भावना का ह्रास हो गया है । कृतज्ञता की भावना समाप्त हो चुकी है । (श्लोक – ९०, ९१) इर्ष्या की आग फैलती जा रही है । हमारे जनतंत्र में विद्वान और मूर्ख के मतों का मूल्य एक समान समझा जाता है । इस देश में छोटे-बडों की मर्यादा खत्म हो रही है । लोग अभिमानी बनते जा रहे है । "इस देश में पशु, पक्षी और कवि के समान एक धर्म को राष्ट्रीय धर्म नहीं बनाया गया है ।"[१४] देश की वास्तविकता का चित्रण करते हुए कवि कहते है –

"गुणा दुर्लभा जाता:
जाता: सुलभा दुर्गुणाश्च देशे ।
सुखं लभ्यते मदिरा
क्षीरं सर्वत्र च दुर्लभम् ॥"[१५]

अर्थात् इस देश में गुण दुर्लभ है परन्तु दुर्गुण सुलभ है । यहाँ शराब आसानी से मिल जाती है परन्तु दूध दुर्लभ है ।

"यह देश अच्छा विकास कर रहा है" इस शीर्षक से लिखे गये इस मुक्तक काव्य में कविने व्यंग्य द्वारा भारतदेश के अध:पतन और विसंगत स्थितियाँ की ओर अंगुलीनिर्देश किया है । राष्ट्रभावना से ओतप्रोत यह कवि देश की विद्रुप स्थितियों से व्याकुल होकर व्यंग्य का शस्त्र उठाता है और समाज के हरक्षेत्र, धर्म, समाज, राजनीति, शिक्षाजगत और अर्थजगत में व्याप्त विकृतियों को प्रकट करने में सफल हुआ है ।

इस काव्यग्रंथ में कविश्री डॉ. हरिनारायण दीक्षितजीने नविनतम शैली ओर नये अभिगम के साथ अपने राष्ट्रप्रेम को प्रकट किया है । उन्होंने इस ग्रंथ में देश की विकट समस्याओं को संक्षेपमें साहजिक, वास्तविक ओर मार्मिक रुप से चित्रित करने में सफलता प्राप्त की । सचमुच कविने गागर में सागर भरने का सार्थक प्रयत्न किया है ।

संदर्भ :

(१) परधर्म परिपुष्णन्
निजधर्माय च तिलाञ्जलिं दत्वा ।
गीतामधरी कुर्वन्
देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम् ॥ - देशोऽयं कुरुते प्रोन्नतिम् – श्लोक – ८

(२) वही, १३

(३) सर्वा भारतजनता
कृतभेदा सम्प्रदायपरिखाभिः ।
परस्परं चेर्ष्यन्ती
कलहाध्वनि कुरुते प्रोन्नतिम् ॥ - देशोऽयं. श्लोक – १६

(४) वही, २३

(५) विद्या नश्यति नश्येत्
किन्तु न नश्येदारक्षणनीतिः ।
ज्ञानवञ्चनां कृत्वा
बत सन्तोष्यन्ते जातयः ॥ देशोऽयं. श्लोक – ३७

(६) असुरक्षास्ति यात्रा
न च सुरक्षितं चलचित्र दर्शनम् ।
मन्ये बमविस्फोटैः
राष्ट्रजनसंख्या नियम्यते ॥ देशोऽयं. श्लोक – ३४

(७) उत्कोचीया माया
पदे पदे परिलक्ष्यतेऽत्र देशे ।
कृष्णं कुरुते श्वेतं
श्वेतं कृष्णं च पलेन या ॥ देशोऽयं. श्लोक – ३८

(८) ऋण गृहित्वा राष्ट्रं
कुरुते स्वप्रजाजनानृणमुक्तान् ॥ देशोऽयं. श्लोक – ४०

(९) वही, ४१

(१०) कौशल्याया देशे
दृश्यतेऽद्य महिला महिला-व्यथिता ।
असूयन्ति सुतवध्वै

प्रायः प्रतिगेहं मातरः ॥ देशोऽयं. श्लोक – ४७

(११) वही, ५४

(१२) जयति कुटिलता नित्यं
सर्वत्र पराजयते च सरलता ।
गोमायूनां पूजा
क्रियते गो-वृषभानादरः ॥ देशोऽयं. श्लोक – ७१

(१३) सा जीविका वरेण्या
मन्यते यस्यामुत्कोचलाभः ।
तद्वान्वरो वरेण्यो
विचार्यतेऽत्र परिणयापणे ॥ देशोऽयं. श्लोक – १०५

(१४) अत्र कवी राष्ट्रीयो
मतः खगो वा पशुश्च राष्ट्रीयः ।
किन्तु न कश्चिद् धर्मो
राष्ट्रीयो भवितुं मन्यते ॥ देशोऽयं. श्लोक – १००

(१५) वही, १०६